International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 297-298

प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण, एक परिवर्तन

अतुल कुमार सिंह

शोध छात्र, जीवाजी वि0वि0 ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में नगरों के उदय और विकास की प्रक्रिया को नगरीकरण की संज्ञा दी जाती है। नगरों के उदय और विकास का अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में सर्वप्रथम नगरों का उदय हड़प्पा संस्कृति के दौरान हुआ। इन नगरों का अस्तित्व लगभग 1800 ई0पूर्व तक बना रहा। तत्पश्चात लगभग एक हजार वर्षों तक भारत में किसी भी नगर का अस्तित्व नहीं दिखाई देता। इसका पुनः आविर्भाव ई0पू0 6ठी शताब्दी से गंगाघाटी में हुआ इसे द्वितीय नगरीकरण की संज्ञा दी गयी है।

प्राग्मौर्युगीन गंगाघाटी के आर्थिक जीवन की प्रमुख विशेषता उसका नगरीकरण है। गार्डन चाइल्ड ने नगरीकरण की विशेषताओं में विशाल भवन एवं घनी आबादी वाली बड़ी बस्तियों का होना आवश्यक बताया है। इसमें खाद्योत्पादन से अलग रहने वाले वर्ग जैसे शासक, शिल्पी, सौदागर, कलाकार, वैज्ञानिक निवास करते थे। अनाज उत्पादित न करने वाले नगरवासियों का पोषण करने के लिए कर के रूप में मिलने वाले कृषि अधिशेष के महत्व पर गार्डन चाइल्ड ने बहुत बल दिया।

भारत में नगरों का उत्थान

भारत में नगरों के उत्थान ने आर्थिक संरचना को ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं राजनीतिक संरचना को भी परिवर्तित कर दिया, पशुचारण अर्थव्यवस्था का स्थान अब विकसित कृषि अर्थव्यवस्था ने ले लिया। साथ ही साथ कृषि अधिशेष के आधार पर शिल्पों व्यवसायों तथा सीमित पैमाने पर आंतरिक व्यापार का भी प्रचलन आरंभ हुआ। इस प्रकार शहरी अर्थव्यवस्था ने द्वितीय नगरीकरण की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

द्वितीय नगरीकरण का काल

प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण का काल प्राग्मौर्युगीन 600–321 ई0पू0 माना जाता है। इसे दूसरा नगरीकरण इसलिए कहा जाता है क्योंकि हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद पहली बार 6ठी शताब्दी ई0पू0 में साहित्यिक स्रोतों में पुनः बड़े संपन्न एवं विकसित नगरों का उल्लेख मिलता है। पालि साहित्य में बुद्धकालीन 60 बड़े नगरों का उल्लेख मिलता है। इस समय के महत्वपूर्ण नगरों में कौशाम्बी, श्रावस्ती, अयोध्या, कपिलवस्तु, वाराणसी, वैशाली, राजगृह, चंपा तक्षशिला आदि है। पुरातात्विक साक्ष्यों से भी सुव्यवस्थित ढंग से बसाई गई बड़ी बस्तियों के प्रमाण मिलते है।

नगरों के विकास के प्रमुख कारक

द्वितीय नगरीकरण के उदय एवं विकास के प्रमुख कारकों में लोहे का कृषि में व्यवहार महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लोहे की जानकारी और इसके उपयोग ने न सिर्फ आर्यों के गंगाघाटी में प्रसार को सुविधाजनक बनाया बल्कि उनकी अर्थव्यवस्था को भी क्रान्तिकारी रूप से प्रभावित किया। लोहे के प्रयोग से कृषि का विस्तार हुआ कृषि कार्य में सुगमता आई। अब किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज उपजाने लगा। इस अधिशेष उत्पादन के आधार पर समाज में नए व्यवसायिक वर्गों का उदय हुआ। इसमें कुछ विभिन्न शिल्पों में लगे थे तो कुछ दूसरों की सेवा कर अपनी जीविका चलाते थे,जैसे नाई, धोबी, दर्जी, मिट्टी के बर्तन बनाने वाले, हाथी दॉत का सामान बनाने वाले, लकड़ी का काम करने वाले, इन व्यवसायियों का कृषि से कोई संबंध नहीं रहा, ये अपना पूरा समय अपने व्यवसाय में लगाते थे।

शिल्प एवं उद्योगों का स्थानीयकरण हुआ बड़े–बड़े बाजार नगरों में परिवर्तित हो गए, व्यवसायिक संगठनों (श्रेणियों) का उदय भी उत्पादन एवं वितरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 6ठी शताब्दी ई0पू0 से ही व्यापार एवं वाणिज्य का विस्तार देश–विदेश में प्रारंभ हो गया, जातक कथाओं में सार्थवाहों का उल्लेख मिलता है जो 500 गाडियों का कारवॉं लेकर चलते एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर समान खरीदा–बेचा करते थे। आतंरिक व्यापार मुख्यतः स्थल मार्ग एवं जल मार्ग से होता था तथा विदेशी व्यापार समुद्री मार्ग से होता था। इस समय लंका, वर्मा, बेबीलोन, दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यापार का उल्लेख मिलता है। व्यापार के विकास से कारीगरों की गतिशीलता बढ़ गई, व्यापारिक मार्गों के किनारे अनेक बाजार बस गए धीरे–धीरे नगरों के विकास को बल मिला। 6ठी शताब्दी ई0पू0 से आहत सिक्के बनने लगे, सिक्कों के प्रचलन ने मौद्रिक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया। इससे व्यापार–वाणिज्य के विकास में वृद्वि हुई। हिसाब–किताब रखने की व्यवस्था का आरंभ हुआ तथा लेखन प्रणाली भी विकसित हुई।

नगरों के विकास को राजनीतिक परिवर्तन ने भी प्रभावित किया। महाजनपदों के उदय के साथ कुछ केन्द्रों का उदय हुआ जो राजधानी या राजनीतिक सत्ता के रूप में विकसित हुऐ, जैसे राजगृह, पाटलिपुत्र, वाराणसी, श्रावस्ती, तक्षशिला इत्यादि ऐसे स्थानों पर राजा एवं प्रशासनिक वर्ग रहने लगा। इन नगरों के विकास ने सामाजिक संरचना को भी कुछ सीमा तक प्रभावित किया, ग्रामों में निवास करने वाले लोग नगरों की तरफ पलायन करने लगे, ग्रामों की अपेक्षा नगरों का वातावरण अधिक उन्मुक्त एवं वर्ण व्यवस्था रहित था। इसलिए नगरों का उत्थान बहुत तीव्र गति से हुआ।

उपसंहार

उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर हम निष्कर्षतः पाते है कि नगरों के उत्थान से तत्कालीन समाज में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं व्यवसायिक सभी पक्षों का संयुक्त रूप से विकास हुआ, किन्तु प्रो0 राम शरण शर्मा जैसे विद्वान आर्थिक

कारणों को ही नगरों के उत्थान के लिए उत्तरदायी मानते है, किन्तु इसके विपरीत हम पाते है कि नगरों के विकास को अनेक कारणों ने प्रभावित किया। ये नगर सुदृढ़ ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं अतिरिक्त उत्पादन के आधार पर विकसित हुए। यहाँ का जीवन अधिक उपयुक्त था। वर्णव्यवस्था की जटिलता से स्वतंत्र होकर व्यापारी, शिल्पी, एवं अन्य व्यवसायी शहरों में रहने लगे और नगरी सभ्यता का विकास किया। अनेक गैर आर्थिक कारणों– राजनीतिक, धार्मिक ने भी शहरों के विकास को प्रभावित किया। अनेक शैक्षणिक केन्द्र भी शहर बन गए, परन्तु अनेक शहर एक ही साथ व्यापारिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक केन्द्र बन गए। उदाहरणस्वरूप, तक्षशिला गांधार की राजधानी थी और व्यापार, धर्म तथा शिक्षा का केन्द्र भी इन सभी तथ्यों से हमें यह जानकारी प्राप्त होती है कि प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण एक मील का पत्थर साबित हुआ, जिसकी प्रक्रिया का पूर्ण विकास कुषाण काल में हुआ।

संदर्भ सूची

1. एडम्स, : द नेचुरल हिस्ट्री ऑफ अर्बनिज्म– एन्शेन्ट सीटीज ऑफ द इन्डस।
2. एन्शेन्ट इण्डिया, एन इन्द्रोडक्टरी आउटलाइन।
3. चाइल्ड, गार्डन : अर्बन रिवोल्यूशन – एन्शेन्ट सिटीज ऑफ द इन्डस।
4. झा, डी0एन0 : एंशेन्ट इण्डियाः एन इन्द्रोडक्टरी आउटलाइन 1977।
5. थापर, रोमिला : एंशेन्ट इण्डियन सोशल हिस्ट्री।
6. मोतीचन्द्र : सार्थवाह (1953)।
7. शर्मा, आर0एस, : भारत के प्राचीन नगरों का पतन।
8. शर्मा, आर0एस0 : आयरन एण्ड अर्बनाइजेशन इन द गंगा बेसिन।